अम्बेडकर के अनुसार पाठ्यक्रम
Curriculum According to Ambedkar

अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का समग्र विकास करना है। इसलिये अम्बेडकर की पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचारधारा भी व्यापक दृष्टिकोण से युक्त थी। अम्बेडकर पाठ्यक्रम में उन विषयों को समाहित करना चाहते थे जो कि छात्रों के लिये उपयोगी हों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित हों। उनका मानना था कि छात्रों को प्राथमिक स्तर से समानता, स्वतन्त्रता एवं विश्व बन्धुत्व की शिक्षा मिलनी चाहिये। इसके लिये वह प्राथमिक स्तर से नैतिक शिक्षा की व्यवस्था चाहते थे। प्राथमिक स्तर पर छात्रों के लिये भाषायी ज्ञान पर अधिक बल देते थे क्योंकि भाषायी ज्ञान ही आगे प्राप्त होने वाले ज्ञान का साधन होता है। इसके साथ- साथ वह बालकों को गणित, भाषा, परिवेशीय अध्ययन एवं विज्ञान आदि की शिक्षा प्रदान करना चाहते थे। उच्च स्तर पर अम्बेडकर उन विषयों की शिक्षा पर बल देना चाहते थे जो कि देश एवं समाज के विकास में उपयोगी हों; जैसे—विज्ञान, गणित, इन्जीनियरिंग एवं साहित्यिक अध्ययन आदि।

अम्बेडकर के अनुसार शिक्षण विधियाँ
Teaching Methods According to Ambedkar

अम्बेडकर की सोच वैज्ञानिक सोच थी। इसलिये वह शिक्षा के औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप दोनों को ही स्वीकार करते थे। उनके अनुसार शिक्षण विधियों का उपयोग छात्र की योग्यता एवं स्तर के अनुरूप करना चाहिये। यदि छात्र किसी एक विधि के द्वारा नहीं सीख पाता है तो शिक्षक को उसके लिये द्वितीय विधि का प्रयोग करना चाहिये। अम्बेडकर द्वारा बौद्ध दर्शन की शिक्षण विधियों को भी स्वीकार किया गया है। उनके अनुसार छात्रों को व्याख्या विधि के द्वारा सिखाया जा सकता है। छोटे-छोटे समूह बनाकर भी शिक्षण कार्य किया जा सकता है। इसमें छात्रों की योग्यता एवं स्तर के अनुसार समूह बनाकर शिक्षण कार्य किया जा सकता है। अम्बेडकर चर्चा विधि को भी उपयुक्त मानते थे जिसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी समान रूप से किसी एक विषय पर चर्चा करते हैं तथा छात्र अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त करते हैं। इसमें छात्र विषय पर अपने विचार भी

प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त वह छात्र को प्राथमिक स्तर पर क्रियाशील रखने के लिये गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को भी उपयोगी मानते थे। इस प्रकार अम्बेडकर ने उन शिक्षण विधियों को अधिक महत्त्व प्रदान किया जो कि बालकेन्द्रित, रुचिपूर्ण तथा छात्रों के अधिगम स्तर को उच्च करने वाली होनी चाहिये। इस प्रकार वह किसी विशेष शिक्षण विधि के पक्षधर नहीं थे।

अम्बेडकर के अनुसार शिक्षक
Teacher According to Ambedkar

अम्बेडकर के अनुसार शिक्षक का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि शिक्षक द्वारा अपनी भूमिका का निर्वहन सदैव निर्णायक, पथ प्रदर्शन एवं परामर्शदाता के रूप में किया जाता है। उनका मानना था कि शिक्षक की भूमिका पूर्णत: निष्पक्ष एवं आदर्श रूप में होनी चाहिये। वह अपने विद्यार्थी जीवन की अनेक घटनाओं में शिक्षक के महत्त्व का वर्णन करते हैं। उनके अनुसार शिक्षक को सदैव अपने शिष्यों के साथ पुत्रवत् स्नेह करना चाहिये तथा उनके सर्वांगीण विकास हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिये। शिक्षक द्वारा समय-समय पर अपने छात्रों की मनोदशा का अध्ययन करना चाहिये तथा उसके अन्तर्गत छिपी हुई प्रतिभाओं का निखार करना चाहिये। शिक्षक को सदैव अपने छात्रों को स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिये तथा उनके साथ आत्मीय व्यवहार करना चाहिये जिससे वे एक-दूसरे के साथ उचित सम्प्रेषण सम्पन्न कर सकें। उचित सम्प्रेषण के आधार पर ही शिक्षक एवं शिक्षार्थी सर्वोत्तम शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सम्पन्न करने में सफल हो सकते हैं।

अम्बेडकर के अनुसार शिक्षार्थी का स्वरूप
Form of Student According to Ambedkar

अम्बेडकर के अनुसार शिक्षार्थी का स्वरूप आज्ञाकारी एवं शिक्षक के प्रति समर्पण भाव से युक्त होना चाहिये। शिक्षार्थी को सदैव अपने शिक्षक का सम्मान करना चाहिये तथा उसके मार्ग का अनुकरण करना चाहिये। इसके साथ-साथ शिक्षार्थी को शिक्षक के समक्ष अपनी प्रत्येक समस्या को प्रस्तुत करना चाहिये। शिक्षक के समक्ष अपने प्रत्येक विचार की सार्थकता को प्रमाणित करने का प्रयास करना चाहिये। यदि शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी को किसी कार्य को न करने का आदेश प्राप्त होता है तो उसको शिक्षक के आदेश का पालन करना चाहिये। शिक्षक को ज्ञान का भण्डार माना गया है। इसलिये शिक्षार्थी को अपने सर्वांगीण विकास हेतु उस ज्ञान के भण्डार से विविध ज्ञानात्मक एवं प्रयोगात्मक तथ्यों का चयन करके अपने जीवन को सुखमय बनाना चाहिये।

अम्बेडकर के अनुसार अनुशासन
Discipline According to Ambedkar

अम्बेडकर के अनुसार अनुशासन एक स्वस्थ एवं व्यापक मानसिक प्रक्रिया का परिणाम है। जब छात्र को यह अनुभव कराया जाता है कि शिक्षा उसके लिये उपयोगी है तथा शिक्षालय में ही उसको शिक्षा प्राप्त हो सकती है तो बालक शिक्षा को प्राप्त करने के लिये शिक्षालय के नियमों को मानता है। इस प्रकार अनुशासन का सम्बन्ध उपयोगिता, महत्त्व एवं मानसिक स्थिति से होता है। विद्यालय में वे ही छात्र अनुशासनहीनता करते हैं जिनको विद्यालय का वातावरण अरुचिपूर्ण एवं अनुपयोगी लगता है। अम्बेडकर का मानना है कि समाज, राष्ट्र एवं विद्यालय में अनुशासन उस स्थिति में ही स्थापित हो सकता है जब नियम सभी की आवश्यकताओं एवं उपयोगिताओं को ध्यान

में रखकर बनाये जायें। जब कोई भी नियम स्वार्थपूर्ति के लिये बनाया जाता है तथा उसका जनकल्याण से कोई सम्बन्ध नहीं होता तो अनुशासनहीनता की स्थिति उत्पन्न होती है। इसलिये अनुशासन की स्थापना का प्रमुख उपाय व्यक्ति के विकास एवं उसकी सुविधाओं को ध्यान में रखना है। विद्यालय का वातावरण ही अनुशासन की स्थापना के लिये उत्तरदायी होता है। यदि विद्यालय का वातावरण गुणवत्तापूर्ण एवं रुचिपूर्ण है तो शिक्षार्थी स्वयं ही अनुशासित होंगे। इसके विपरीत विद्यालय का वातावरण अरुचिपूर्ण एवं अशैक्षिक है तो शिक्षार्थी अनुशासित नहीं होंगे। अत: डॉ. अम्बेडकर के अनुसार अनुशासन का सम्बन्ध व्यक्ति की मनोदशा एवं परिस्थितियों से होता है।